शोध मंथन, Impact Factor 5.463 (SJIF), UGC No. 40908 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X,
Vol. 9, Issue 4, pp (163-170), Month: Dec. 2018

भारत में आतंकवादः समस्या एवं समाधान

कु0 सोनिया वर्मा
पी–एच0डी0 शोध छात्रा
इस्माईल नेशनल महिला (पी.जी.) कॉलेज, मेरठ, भारत ।
Email: soniyaverma807@gmail.com

सारांश

भारतीय राष्ट्र की सबसे बड़ी चुनौती आतंकवाद की है। आतंकवाद विश्व की एक गम्भीरतम समस्या है आतंकवाद एक ऐसी समस्या है, जिसका भारत में हम तीन दशकों से सामना कर रहे है। आतंकवादी प्रवृत्तियाँ इतनी तेजी से उभरी है कि कुछ लोग ऐसा कहने को मजबूर हो गए है कि वर्तमान युग आतंकवादी युग है। जम्मू–कश्मीर, असम, मणिपुर, त्रिपुरा व मिजोरम में आतंकवादी बड़े पैमाने पर हिंसा करते है। आज आतंकवाद न सिर्फ राष्ट्रीय किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को भी अस्थिर कर देती है।

मुख्य शब्द– *आतंकवाद, अन्तर्राष्ट्रीय, समस्या।*

प्रस्तावना

आतंकवाद सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त भय है आज कोई भी देश इससे सुरक्षित नहीं है, चाहे हम किसी भी स्थान, समय परिस्थिति में क्यों न हो? समय, स्थान, परिस्थितियों के अनुसार इसका स्वरूप बदल रहा है, वैसे इसका तात्पर्य कुछ व्यक्तियों या जन समुदाय द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंसा और बल प्रयोग का सहारा लेकर अपनी बात मनवाने का प्रयास करना है।

'आतंक' से तात्पर्य संत्रास एवं भय की एक ऐसी मानसिक अवस्था है जो पीड़ा की आशंका अथवा प्रतिकूल एवं आशंकाजनक घटनाओं से उत्पन्न होती है, संकट के समय जो भय उत्पन्न होता है, वह आतंक कहलाता है, जब यह कार्य एक व्यक्ति कुछ व्यक्तियों या संगठित समूहों द्वारा किया जाता है, तब उन्हें आतंकवादी कहा जाता है वस्तुतः आतंकवादी दूसरों को आतंकित करने वाला एक उद्देश्य सिद्वान्त और विचारधारा से जुड़ा व्यक्ति होता है, जिसके लिए हिंसा कोई पाप नहीं होती।

ऐतिहासिक दृष्टि से आतंकवाद व्यापक असंतोष एवं विद्रोह की भावना तथा अनुशासहीनता की हिंसात्मक अभिव्यक्ति है जिसके विभिन्न रूपों में हत्या, अपहरण, लूट, आगजनी, वायुयानों का अपहरण एवं उनमें बम विस्फोट, रेल की पटरियों को उड़ा देने के साथ यात्री गाड़ियों में विस्फोट करना आदि हैं व्यावहारिक रूप में यह राजनीतिक स्वार्थ लोलुपता का सिद्धि के अमोद्य अस्त्र के रूप में विद्यमान है और अपनी बात को मनवाने एवं मनमानी करने हेतु यह जीवन पद्धति का एक अंग बन गया है।

जैकिन्स का मत है कि ''आतंकवाद में भय प्रचारित करना तथा हिंसक गतिविधियों को क्रियाशील रखना निहित होता है।''

"Terrorism' शब्द फ्रेंच शब्द Terrorisme से बना है, जो कि लेटिन के 'Terreo' से बना है, जिसका अर्थ है डराना इस प्रकार आतंकवाद में भय, निर्दोषों की हत्या, अव्यवस्था आदि निहित है, परन्तु यह कहना मुश्किल है कि मानवीय हिंसा कब धीरे–धीरे अपना स्वरूप बदलकर आतंकवाद के रूप में प्रतिस्थापित हो गई है श्वर्जर बर्गर ने लिखा है कि, ''आतंकवाद भय पैदा करने के उद्देश्य से शक्ति का प्रयोग करना या इस प्रकार अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है।''

आतंकवाद

आ– आडम्बर, आगजनी, अत्याचार

तं – तोडफोड़ करना

क– कुंत्सित विचार

वा – विस्फोट करना

द – दहशत फैलाना

भारत में आतंकवाद

भारत में विगत कुछ 2 दशकों से किसी न किसी रूप में आतंकवाद पंख पसार रहा है, भारत–पाकिस्तान बंटवारे समय से ही इसका प्रत्यक्ष अनुभव देश को हुआ, परन्तु अस्सी के दशक तक तो पाक प्रायोजित आतंकवाद पंजाब में कहर का कारण ही बन बैठा एवं नब्बे के दशक में यह जम्मू कश्मीर इत्यादि विभिन्न प्रान्तों में व्याप्त हो गया। धीरे–धीरे इसे धार्मिक आवरण ओढ़ानें का प्रयास किया गया, जिसे 'जेहादी आतंकवाद' का नाम दिया गया इस आतंकवाद के साथ–साथ भारत में हिंसात्मक आन्दोलन नक्सलवाद के रूप में उभरा, जो धीरे–धीरे पश्चिमी बंगाल, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, ओडिशा, आन्ध्र प्रदेश तथा महाराष्ट्र में अपनी पैंठ बनाने के साथ–साथ अन्य राज्यों में भी दस्तक देने लगा है। आतंकवाद का एक अन्य रूप अलगावादी परिप्रेक्ष्य में पूर्वोत्तर राज्यों जैसे– मणिपुर, मिजोरम, असम, नागालैण्ड, त्रिपुरा आदि में परिलक्षित हुआ है।

भारत में आतंकवादी संगठन

क्षेत्र (भारत)	
जम्मू कश्मीर	अलकायदा तश्कर–ए–तोएबा, जैश–ए–मोहम्मद, हिजबुल, मुजाहिदीन, इकबाल मुसलीन, दि यूनाइटेड माइनोरिटिज, फ्रन्ट (यू0एस0एफ0) यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम, लॉ बोडो स्टूडेंट्स यूनियन, एबीएस युद्ध बोडो विद्यार्थी संगठन, पीपुल्स एक्शन कमेटी)
तमिलनाडु	लिबरेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम (लिट्टे)
पंजाब	खालिस्तान लिबरेशन बब्बर खालसा
छत्तीसगढ़,झारखण्ड, बंगाल	नक्सलवाद
पूर्वी भारत, नेपाल	माओवाद
बिहार, आन्ध्र प्रदेश	पीपुल्स वार ग्रुप

कश्मीर ऐसा राज्य है, जहाँ वर्तमान में दो सौ से भी अधिक आतंकवादी संगठन काम कर रहे हैं जिनमें हिजबुल मुजाहिदीन, भारत में आतंकवाद का व्यवस्थित रूप से आरम्भ हम जम्मू

कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित गतिविधियों से मानते हैं किन्तु इसके पीछे अप्रत्यक्ष रूप से उस समय की विश्व की दो ध्रुवीय शक्तियाँ एवं उनकी असीम महत्वाकांक्षाएं थीं, जो सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित कर रही थी। अमेरिका का एशिया में अपनी धाक जमाने एवं प्राकृतिक संसाधनों पर एकाधिकार करने हेतु रणनीति अपनाना, आतंकवाद के विस्तार में पहला चरण था, अपनी इस रणनीति के तहत यू0एस0ए0 ने अफगानिस्तान में हस्तक्षेप आरम्भर किया, किन्तु उसे एशिया में अपने स्थायी केन्द्र की आवश्यकता थी, इसीलिए उसने पाकिस्तान को चुना और उसे आर्थिक सहायता देना आरम्भ किया पाकिस्तान ने इस सहायता को भारत के विरूद्व प्रयोग करना आरम्भ किया, जिसकी परिणति हम जम्मू कश्मीर में आतंकवाद की भयावहता के रूप में देख सकते हैं। अल–बदर तारीक–अल मुजाहिदीन, जम्मू–कश्मीर लिबरेशन फ्रंट आदि प्रमुख है, जम्मू कश्मीर में आतंकवादी धर्म एवं जेहाद के नाम पर वहाँ की भोली भाली जनता को भड़का रहे है, जिससे कि धार्मिक आतंकवाद फैल रहा है, धर्म के नाम पर कश्मीर की स्वतंत्रता के नाम पर यहाँ आतंकवादी हिंसात्मक कार्यवाहियों को अंजाम देते रहते है, जम्मू–कश्मीर लिबरेशन फ्रंट था, एक सैनिक संगठन था, इसका मुख्यालय ब्रिटेन में था, बाद में ये शाखाएं फ्रांस, हालैण्ड, जर्मनी, अमेरिका एवं मध्य एशिया के चारों देशों में खुल गई, पाकिस्तान इसकी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा। जिसने भारत में सबसे ज्यादा अपनी गतिविधियों को अंजाम दिया। सीमा पर आंतक को पाकिस्तान द्वारा सहायता दिए जाने के कारण भारत व पाक में तनाव ही पैदा हो रहा है जिसके कारण आपसी विश्वास में कमी आ रही है। वर्तमान में विश्व के मानचित्र पर पाक के आतंकवादी संगठन प्रमुख रूप से अंकित हो गए है यह भारत ही नहीं विश्व की समस्या है, क्योंकि विश्व में आतंकवाद की जड़े कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में पाक से जुड़ जाती है।

पंजाब में आतंकवाद पृथक खालिस्तान की मांग को लेकर शुरू हुआ, जिसने देश की शांति व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। पंजाब में खालिस्तान की मांग 1970 के आसपास उठने लगी और 1980 में अपने चरम पर आ पहुँची, पंजाब में पृथकतावादी आन्दोलन के बीज ज्ञान बख्तार सिंह के द्वारा बोए गए थे, जो बिरलीधन के एक नक्सलवादी समर्थक नेता थे बख्तार सिंह ब्रिटेन स्थित शिरोमणि अकाली दल के खालिस्तान समर्थक गुट के नेता थे। भिण्डर वाला के अलावा जगजीत सिंह ने इस आन्दोलन को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उठाया एवं अलग खालिस्तान की मांग कर इस समस्या को नया मोड़ दिया इसी तरह पंजाब में आतंकवादी घटनाएँ बड़ी और इसी के चलते 31 अक्टूबर 1984 को प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की हत्या कर दी गयी। 1985 के बाद यह फिर से जोर पकड़ने लगा स्वर्ण मंदिर पर फिर से नियंत्रण करने का प्रयास किया गया राष्ट्रीय सुरक्षा बल के जवानों द्वारा 'ऑपरेशन थंडर–2' नामक ऑपरेशन चलाया गया इससे कुछ समय के लिए सिख आतंकवाद ढीला पड़ गया, लेकिन 1989 में आतंकवादी कार्यवाहियों में अचानक वृद्धि हो गई तथा हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली आदि में इसका प्रभाव दिखाई दिया जाने लगा किन्तु वर्तमान समय में यहाँ शांति स्थापित है और खालिस्तान की मांग को उठाने वाले आतंकवादी अन्य देशों में जा बसे हैं।

भारत में आतंकवाद की भयावहता हमें उत्तर–पूर्व में स्थापित राज्यों में देखने को मिलती

है, असम में कुल 25 आतंकवादी संगठन है, जिनके माध्यम से असम में आज आतंकवाद फैल रहा है यहाँ समय–समय पर अलग राष्ट्र की मांग उठने लगी है। असम में विदेशियों को बाहर निकालने की मांग आँसू नामक एक संगठन ने की जब आँसू की मांग पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो इसके कार्यकर्ता हिंसा पर उतर आए। असम में यही से हिंसा उत्तरोत्तर बढ़ती ही चली गई इसी हिंसा को अन्य संगठनों ने भी बढ़ावा दिया 'आँसू' के बाद 1987 में 'बोडो' नामक चरमपंथी संगठन की मांग थी कि असम को शेष भारत से अलग करके स्वतंत्र राज्य बनाओ इसी से असमियों में क्षेत्रवाद की भावना घर कर गई 'अखिल बोडो छात्रसंघ' ने हिंसा के नए मानदण्ड स्थापित किए इसने आदिवासी, गैर आदिवासी आधार पर ही असम को बांटने की मांग उठाई जिससे हिंसा और अधिक तीव्र हो गई, इसी समय 'उल्फा' के नए संगठन को प्रभाव बढ़ता चला गया असम की आतंकवादी गतिविधियों में मणिपुर आतंकवादी संगठन आकर जुड़ गए जिनका मत है कि हमारी संस्कृति व भाशा भी अलग है और न हमारा आर्थिक विकास हुआ है इसलिए हम भारत से अलग रहकर सुखी जीवन की कल्पना कर रहे है। मणिपुर के संगठन है –यूनाइटेड नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट आदि मेघालय के आतंकवादी संगठनों (पीपल्स लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ मेघालय, हिनीट्रेज नेशनल लिबरेशन काउन्सिल आदि) का मानना है कि केन्द्र हमारी समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रहा है, इसीलिए समय–समय पर यह संगठन हिंसात्मक कार्यवाही करने से भी नहीं हिचकिचाते।

असम, मेघालय, त्रिपुरा आदि में बांग्लादेशियों की संख्या काफी मात्रा में है जिसके कारण वहाँ अशांति का जन्म हो रहा है। मिजोरम की जनता में भी अलगावाद की भावना पाई जाती है, मिजोरम की तरह नागालैण्ड भी अषांत है । 1970 के आसपास आतंकवाद की शुरूआत हुई वहाँ 'नागा' जाति के लोग बहुतायत में है 'नागा' के विद्रोह की शुरूआत देश की आजादी के समय से हुई अंग्रेजों ने इन्हें लड़ाकू जाति के रूप में समर्थन दिया बाद में पाकिस्तान में आई0एस0आई0 के माध्यम से नागाओं को हथियारों की आपूर्ति की गई जो अभी तक जारी है इन विद्रोहियों का वैचारिक रूप से वामपंथियों से जुड़ाव होने के कारण चीन व म्यांमार से मदद मिलती है, इसकी कमान नागा नेशनल काउन्सिल (एन0एन0सी0) एवं नेशनल सोशलिस्ट काउन्सिल ऑफ नागालैण्ड (एन0एस0सी0एन0) ने अपने हाथ में ले ली यहाँ सैनिक एवं राजनीतिक दो प्रकार से शाखाएं काम कर रही है। ये लक्षण भारत से अपने आपको पृथकतावादी सोच के कारण पैदा हुए जिसमें भारत सरकार की पूर्णतः उपेक्षा की गई थी।

त्रिपुरा में 1980 के आसपास आतंकवाद की शुरूआत हुई, जब त्रिपुरा के आदिवासी कबीलों ने गैर–कबीलाई लोगों को त्रिपुरा से बाहर खदेड़ना शुरू कर दिया, त्रिपुरा के आतंकवादी संगठन त्रिपुरा डिफेंस फोर्स, नेशनल लिबरेशन फ्रण्ट ऑफ त्रिपुरा आदि है, ''राजनीतिक आर्थिक एवं पिछड़ेपन के कारण इस क्षेत्र का अधिकांश युवा वर्ग नशीली दवाओं का अभ्यस्त हो चुका है, जिसके कारण आतंकवाद को बढ़ावा मिल रहा है नषीली दवाओं का धंधा करने वाले व्यक्ति अपने निहित स्वार्थ के लिए आतंकवाद को बढ़ावा देते है, त्रिपुरा राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा आदि संगठनों की मांग है कि यह क्षेत्र स्थानीय लोगों का है माओवाद की गिरफ्त में भारत के ओड़िशा,

असम, बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, आन्ध्र प्रदेश है जो मात्र हिंसा की ही बोली बोलते है माओवादी अपनी सता स्थापित करने में लालायित है जिस कारण ये स्वयं को राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित करने में सफल रहे है।

भारत में नक्सलवाद के रूप में फलीभूत हो रहे आतंकवाद को चीन समर्थन दे रहा है वह अरूणाचल प्रदेश पर अपना अधिकार जमाना चाहता है पाक एवं चीन भारत में आतंकवाद को बढ़ावा देने हेतु भरसक प्रयासरत है। विभिन्न विचारधाराओं धर्म आदि को आधार बनाकर भारत को खण्डित करना चाहते हैं।

आतंकवाद के कारण

भारत जैसे विविधता लिए हुए देश में जहाँ विभिन्न जातियाँ, भाषाए एवं धर्म सम्प्रदायों से सम्बन्धित लोग निवास करते हैं, तो यहाँ आतंकवाद के प्रसार हेतु उचित वातावरण है, यद्यपि जहाँ अनेकता में 'एकता भारत की ताकत है वहाँ कई बार विद्वेष का कारण भी बन जाती है आतंकवाद के कारण भारत संरचना के मूल में भी है जो ऐतिहासिक, सामाजिक राजनीतिक एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य में विद्यमान है।

भारत में आर्थिक, सामाजिक दोनों स्तरों पर शोषण हो रहा है जिसके कारण देश को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है वर्तमान में देश में प्रत्येक प्रान्त के अंचलों में आतंकवादी अपने अपने संगठन बना चुके है समय–समय पर वे हिंसा को जन्म देते है कहीं संसाधनों का अभाव तो कहीं क्षेत्रीयतावाद, कहीं अलगाववाद तो कहीं नक्सलवाद जैसे कारण भारत में समस्या उत्पन्न करते ही जा रहे हैं, इसी असंतोष के कारण आतंकवाद का जन्म होता है आर्थिक संसाधनों पर सभी का समान अधिकार होना चाहिए न कि कुछ वर्चस्ववादी लोगों का यही वर्चस्ववाद की भावना आतंकवाद को जन्म देती है।

आतंकवाद के कारणों में अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना या अलगावाद भी है, क्योंकि अल्पसंख्यकों में सुरक्षा एवं आत्मविश्वास की कमी देखने को मिलती है जिसके कारण अल्पंसख्यसकों को संरक्षण की तलाश सदैव ही बनी रही है अलंख्यकों को मूलभूत सुविधाओं के सम्बन्ध में उपेक्षित किया जाता है यही भावना उनमें निराशा एवं हीन भावना को जन्म देती है तो कहीं न कहीं उनमें कुण्ठा का जन्म होता है जिसके परिणामस्वरूप विद्रोह हिंसा और अलगाववादी प्रवृत्तियाँ हमारे सम्मुख आती है यहाँ भावना वर्तमान में भारत में देखने को मिल रही है।

उप्रेती ने आतंकवाद का यही मूल कारण माना और कहा कि ''भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में अलगाववाद और आतंकवाद का प्रमुख कारण यही है भारत में धार्मिक अल्पसंख्यकों का राजनीतिक रूप से संगठित कर आतंकवाद के लिए प्रेरित किया जाता है।''

कुछ देषों की अन्तर्राष्ट्रीय दादागिरी एवं आर्थिक साम्राज्यवादी नीतियों ने भी आतंकवाद को जन्म दिया है अमेरिका द्वारा इराक, लीबिया, सीरिया, अफगानिस्तान पर कब्जा तथा अमेरिकन साम्राज्यवादी मकड़जाल आदि के कारण अमेरिका हर राष्ट्र का दुश्मन बन बैठा है इसी कारण खाड़ी देशों में अमेरिका एवं उसके नागरिकों के प्रति वैमनस्य तथा आतंकवाद का जन्म

हुआ है जिस आतंकवाद की शुरूआत अमेरिका ने निर्दोष व्यक्तियों को मारने से की थी, उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप अलकायदा का जन्म और हिंसात्मक कार्यवाहियों के दमन के लिए हुआ इसलिए आतंकवाद साम्राज्यवाद की भावना एवं उपनिवेशवाद की भी देन है।

आतंकवाद की उत्पत्ति में कोई एक कारण नहीं है जिसको हम केन्द्र में रख सकें इसके अनेक कारण है जिनमें राजनीतिक सत्ता की प्राप्ति, राष्ट्रों की विदेश नीति, आर्थिक पिछड़ापन, सांस्कृतिक दृष्टि, धार्मिक कट्टरता या धर्मान्धता, हथियारों की बिक्री प्रक्रिया व धर्म विशेष पर आधारित राज्य के निर्माण की मांग विकास की अधूरी परिकल्पना, अशिक्षा, सांस्कृतिक उपेक्षा, आतंकवाद की गलत व्याख्या किया जाना मानवीय मूल्यों में गिरावट आदि सम्मिलित है। आतंकवाद को बढ़ावा देने में सहायक है– तेल, खाद्यान्न व वस्त्र आदि भौतिक संसाधनों पर पूंजीवादी ताकतों का वर्चस्व।

स्वतंत्र भारत में हिंसात्मक उपद्रव एवं उग्रवाद का सामना करने हेतु सेना एवं अनेक सुरक्षा बलों का प्रयोग किया जा रहा है इतना ही नहीं आतंकवाद के खिलाफ कठोर कानून भी बनाए गए है सन् 1987 में पहली बार आतंक से लड़ने हेतु कानून का निर्माण किया गया आतंककारी एवं विध्वसंक गतिविधियाँ कानून (टाडा) बनाया गया, परन्तु राजनेताओं द्वारा इसके दुरूपयोग करने की खबरें (रोकथाम) आने के बाद इसे रद्द कर दिया गया इसके बाद टाडा के स्थान पर आतंकवाद रोकथाम कानून (पोटा) लाया गया, लेकिन उससे क्या हुआ कुछ भी तो नहीं वरन् आतंकवाद का विस्तार ही होता जा रहा है।

आंतकवाद का वर्तमान स्तर

1. आतंकवादी तन्जीमों के मुख्य नेताओं के खात्में के पश्चात उनमें नेतृत्व की कमी और बिखराव की स्थिति आई है।
2. आतंकवादी तन्जीमों में आपसी प्रतिद्धन्दिता/मतभेद के कारण बहुत सारे आतंकवादीयों का खात्मा हुआ है।
3. आर्थिक तंगी और हथियारों की कमी।
4. आतंकवाद का अपराधीकरण।
5. सुरक्षा बलों से सीधा सामना ना करते हुए आई0ई0डी0 और ग्रेनेड हमले की मदद से उन्हें ज्यादा से ज्यादा नुकसान करने की कोशिश करते हैं।

फारस की खाड़ी के देशों और उसके आस पास आइएसआईएस को एक डरावनी आधारणा के तौर पर देखा जा रहा है जो अलकायदा की एक कड़ी के रूप में शुरू हुआ और आज विश्व में सबसे शक्तिशाली संगठित ताकत और भीषण उग्रवादी संगठन बन गया है जो शुरू से ही कट्टरवादिता के लिए जाना जाता है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ आईएसआईएस का प्रभाव पहले से ही व्याप्त है और ये सुरक्षा एजेन्सियों के लिए अत्यन्त कठिन समय है। सन् 2014 में रमज़ान के समय अबू बकर अल बगदादी ने अपने भाषण में कहा कि अब वो भारत सहित बहुत से अन्य देशों के खिलाफ युद्ध करेगा। ये चिंताचनक विषय था।

पहले से भी कुछ ऐसी बातें हैं जहाँ कश्मीरी युवाओं को देखा गया है कि जो गहरे रूप से देवबंद स्कूल से जुड़ रहे है और कुछ या आईएसआईएस के झंडे लहराते देखा गया। ऐसी घटनाएं अक्टूबर 2014 फिर हुई यद्यपि कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने इन गतिविधियों को मूर्खो का काम बताया था। इससे भी अधिक भारत के लिए शोचनीय विषय में था कि ये आईएसआईएस के मुख्य निशाने की ओर संकेत की संभावनाएं दिखती है इस अभिभाषण के दौरान म्यामांर, पाकिस्तान और जम्मू कश्मीर के मुसलमानों के छिपों चेहरों की झलक मिलती है।

इण्डियन मुजाहिदीन के लोग ये विश्वास करते है कि अनेक चर्चित राज्यों में गरीब मुसलमानों को आतंकवादियों के संगठन में सम्मिलित किया जा सकता है इस परिस्थिति में आईएसआईएस की सफलतापूर्ण समायोजनाएं भारत के अंदर बढ़ रहे आतंकी समूहों ने भारतीस सुरक्षा व्यवस्था को एक कड़े दौर से गुजरने पर मजबूर कर दिया है ओर इस बढ़ते आतंक को रोकना बहुत अधिक चुनौतिपूर्ण बन गया है।

पाकिस्तान हुर्रियत कांफ्रेंस के साथ बैठक कर रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य कश्मीर में अलगाववादी आतंकवाद को बढ़ाना है और भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर करना है।

राष्ट्रवाद सम्पूर्ण भारत को जोड़ने का कार्य करता है। परन्तु आतंकवाद इसका एक चुनौती बना हुआ है। विशेषकर इस्लामिक आतंकवाद। क्योंकि पाकिस्तान न केवल जम्मू कश्मीर में अपितु पूरे भारत में इस्लामिक आतंकवाद को प्रोत्साहित कर रहा है जैसे – उत्तर–पूर्वी भारत में आतंकवादी संगठनों के साथ आपसी तालमेल स्थापित कर रहा है तथा पड़ौसी देश म्यांमार, बांग्लादेश, नेपाल में आतंकवादी संगठनों के प्रशिक्षण कैम्प संचालित कर रहा है तथा साथ ही चीन के साथ मिलकर भारत को घेरने की कोशिश कर रहा है।

आतंकवाद के निदान हेतु सुझाव

- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर खुफिया एजेंसियों को अधिक मजबूती प्रदान की जाए। राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसी सुरक्षा एजेंसी का निर्माण किया जाए जिसकी भूमिका अमेरिका की सी0आई0ए0 की भांति हो।
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन किया जाए, जिसमें हिंसा की रोकथाम, मानव अधिकारों का संरक्षण आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाए। आतंकवाद विरोधी प्रशिक्षण केन्द्रों का संचालन किया जाये। ये कार्य यूनेस्को एवं यू0एन0ओ0 के तत्वाधान में किया जाये।
- क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय तीनों ही स्तरों पर आतंकवाद विरोधी नीति का निर्माण किया जाए।
- आतंकवाद की रोकथाम के लिए समुद्री तहों, हवाई अड्डो, रेलवे, बस स्टेशनों सार्वजनिक स्थलों एवं लोकतंत्र के प्रतीकों को सुरक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है।
- आतंकवादियों को अत्याधुनिक हथियार, उपकरणों एवं आर्थिक सहायता देने वाले देशों के विरूद्व लामबद्ध होकर विरोध करने एवं आतंकवादियों को फण्ड स्त्रोत पर नियंत्रण की महति आवश्यकता है।

- जैविकीय, रासायनिक, परमाण्विक, नाभिकीय विकिरण, सांस्कृतिक, धार्मिक आणविक, साइबर आदि के द्वारा जो आतंकवाद फैलाया जा रहा है उसके लिए कठोर कदम उठाए जाए। जिसके तहत दोशियों को शीघ्र ही दण्ड दिया जाये उन पर किसी भी रूप में दया नहीं दिखाई जाए दण्ड का ऐसा प्रावधान हो कि अन्य आतंकवादियों को उससे भय लगें।
- आतंकवाद से निवारण हेतु सुरक्षा स्वास्थ्य एवं कल्याण को सही स्थिति रखने के लिए प्रत्येक व्यक्ति से सामाजिक, आर्थिक, स्तर पर समानता का व्यवहार किया जाए।
- आतंकवाद का निदान तभी हो सकता है जब आम नागरिक अधिक जागरूक हो स्वयं के स्तर पर उनका मुकाबला करने का उसमें साहस हों।
- गांधी दर्शन के मूल्यों का अधिकाधिक प्रचार प्रसार हो अहिंसा का दर्शन वास्तविक रूप से अपनाया जाए।
- नवीन तकनीकी का प्रयोग मानव के विकास के रूप में हो न कि विध्वंस के रूप में इसका ज्ञान सही रूप में प्रसारित हों।

संदर्भ

1. प्रतियोगिता दर्पण अगस्त 2013
2. चौधरी अमृता, *''भारतीय राष्ट्रवाद एवं आतंकवाद : चुनौती और समाधान जम्मू–कश्मीर के विशेष संदर्भ में''* वर्ष–अष्टम अंक प्रथम, जनवरी–जून, 2016
3. शर्मा डॉ0 प्रभुदत्त, *'अन्तर्राष्ट्रीय संगठन'* कॉलेज बुक डिपो 83 त्रिपोलिया बाजार जयपुर वर्ष 2003
4. सिंहल डॉ0 एस0सी0, *'भारत की विदेश नीति'* लक्ष्मी नारायण अग्रवाल वर्ष 2007
5. शर्मा डॉ0 मथुरालाल, नाटाणी प्रकाश नारायण, *'विदेश नीतियाँ'* कालेज बुक डिपो जयपुर वर्ष 2010
6. धवन एम0एल0, *'भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन का उद्भव एवं विकास'* अजफ्रन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 2003
7. गुप्त विश्व प्रकाश गुप्त मोहिनी, 'राजनीतिक विचारधाराएँ उद्भव और विकास राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली 2005
8. दीक्षित जे0एन0: 'भारत की विदेश नीति और आतंकवादः ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली 2006
9. पंत पुष्पेश '21वीं शताब्दी में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धः टाटा मैग्राहिल नई दिल्ली, 2014